

नमो नमो निम्मलदंसणस्स

पू. आनंद-क्षमा-ललित-सुदील-सुधर्मसागर गुरूभ्यो नमः

३० / १

गच्छायारो-सत्तमं पइण्णयं

मुनि दीपरत्नसागर

Date : / / 2012

Jain Aagam Online Series-30/1

३०/१ गंथाणुक्कमो

कमंको	विसय	सुतं	गाहा	अणुक्कमो	पिट्ठंको
१	मंगलं-आई	-	१-२	१-२	१
२	गच्छ संवसमाणस्सगुणा	-	३-६	३-६	१
३	सूरि-सरुवं-वण्णणं	-	७-४०	७-४०	१
४	गुरु सरुवं-वण्णणं	-	४१-१०६	४१-१०६	३
५	अज्जा सरुवं-वण्णणं	-	१०७-१३४	१०७-१३४	७
६	उपसंहार	-	१३४-१३७	१३४-१३७	८

३०/१

गच्छायारं – सत्तमं पइण्णायं-१

- [१] नमिऊण महावीरं तियसिंदनमंसियं महाभागं ।
गच्छायारं किंची उद्धरिमो सुयसमुद्दाओ ॥
- [२] अत्थेगे गोयमा ! पाणी, जे उम्मग्गपइट्ठिए ।
गच्छंमि संवसिताणं, भमई भवपरंपरं ॥
- [३] जामद्धं जाम दिन पक्खं, मासं संवच्छरं पि वा ।
समग्गपट्ठिए गच्छे, संवसमाणस्स गोयमा ! ॥
- [४] लीला अलसमाणस्स, निरुच्छाहस्स वीमणं ।
पिक्खविक्खाइ अन्नेसिं, महानुभागाणं साहुणं ॥
- [५] उज्जमं सव्वथामेसु, घोरं वीर-तवाइयं ।
लज्जं संकं अइकम्म, तस्स विरियं समुच्छले ॥
- [६] वीरिएणं तु जीवस्स, समुच्छलिएणं गोयमा ! ।
जम्मंतरकए पावे, पाणी मुहुत्तेण निद्धहे ॥
- [७] तम्हा निउणं निहालेउं, गच्छं सम्मग्गपट्ठियं ।
वसिज्ज तत्थ आजम्मं, गोयमा ! संजए मुनी ॥
- [८] मेढी आलंबनं खंभं, दिट्ठी जाणं सुउत्तमं ।
सूरी जं होइ गच्छस्स, तम्हा तं तु परिक्खए ॥
- [९] भयवं ! केहिं लिंगेहिं, सूरिं उम्मग्गपट्ठियं ? ।
वियाणिज्जा छउमत्थे, मुनी ! तं मे निसामय ॥
- [१०] सच्छंदयारिं दुस्सीलं, आरंभेसु पवत्तयं ।
पीढयाइ पडीबद्धं आउक्काय विहिंसगं ॥
- [११] मूलुत्तरगुणब्भट्ठं सामायारी विराहयं ।
अदिन्नालोयणं निच्चं, निच्चं विगहपरायणं ॥
- [१२] छत्तीसगुणसमन्नागएण तेण वि अवस्स दायव्वा ।
परसक्खिया विसोही सुट्ठु वि ववहार-कुसलेणं ॥
- [१३] जह सुकुसलोऽवि विज्जो अन्नस्स कहेइ अत्तणो वाहिं ।
विज्जुवएसं सुच्चा पच्छा सो कम्म-मायरइ ॥
- [१४] देसं खित्तं तु जाणिता, वत्थं पत्तं उवस्सयं ।
संगहे साहुवग्गं च, सुत्तत्थं च निहालई ॥
- [१५] संगहोवग्गहं विहिणा, न करेइ य जो गणी ।
समणं समणिं तु दिक्खिता, सामायारिं न गाहए ॥

- [१६] बालाणं जो उ सीसाणं, जीहाए उवलंपए ।
न सम्मं मग्गं गाहेइ, सो सूरी जाण वेरिओ ॥
- [१७] जीहाए विलिहंतो न भद्दओ सारणा जहिं नत्थि ।
दंडेण वि ताडंतो स भद्दओ सारणा जत्थ ॥
- [१८] सीसोऽवि वेरिओ सो उ, जो गुरुं न विबोहए ।
पमाय-मइराघत्थं, सामायारी विराहयं ॥
- [१९] तुम्हारिसावि मुनिवर ! पमायवसगा हवंते जइ पुरिसा ।
तेण को अन्नो अम्हं आलंबन हज्ज संसारे ? ॥
- [२०] नाणंमि दंसणम्मि य चरणंमि य तिसु वि समयसारेसु ।
चोएइ जो ठवेउं गणमप्पाणं य सो य गणी ॥
- [२१] पिंडं उवहिं च सिज्जं उग्गम-उप्पायणे-सणासुद्धं ।
चारित्तरक्खणट्ठा सोहितो होइ स चरिती ॥
- [२२] अपरिस्सावी सम्मं समपासी चेव होइ कज्जेसु ।
सो रक्खइ चक्खुं पि व सबाल-वुइढाउलं गच्छं ॥
- [२३] सीयावेइ विहारं सुहसीलगुणेहिं जो अबुद्धीओ ।
सो नवरि लिंगधारी संजमजोएण निस्सारो ॥
- [२४] कुल-गाम-नगर-रज्जं पयहिअ जो तेसु कुणइ अ ममतं ।
सो नवरि लिंगधारी संजमजोएण निस्सारो ॥
- [२५] विहिणा जो उ चोएइ, सुतं अत्थं च गाहए ।
सो धन्नो सो य पुण्णो य, स बंधू मोक्खदायगो ॥
- [२६] स एव भव्व-सत्ताणं, चक्खुभूए वियाहिए ।
दंसेइ जो जिणुद्धिट्ठं, अनुट्ठाणं जहट्ठियं ॥
- [२७] तित्थयरसमो सूरी सम्मं जो जिनमयं पयासेइ ।
आणं अइक्कमतो सो कापुरिसो न सप्पुरिसो ॥
- [२८] भट्ठायारो सूरी भट्ठायारानुवेक्खओ सूरी ।
उम्मगठिओ सूरी तिन्नि वि मग्गं पणासंति ॥
- [२९] उम्मगगठिए सम्मग्गनासए जो य सेवए सूरी ।
नियमेणं सो गोयम ! अप्पं पाडेइ संसारे ॥
- [३०] उम्मगगठिओ एक्कोऽवि नासए भव्वसत्तसंघाए ।
तं मग्गमनुसरंते जह कुत्तारो नरो होइ ॥
- [३१] उम्मगग-मग्ग-संपट्ठियाण सूरीण गोयमा ! नूनं ।
संसारो य अनंतो होइ य सम्मग्गनासीणं ॥
- [३२] सुद्धं सुसाहुमग्गं कहमाणो ठवइ तइयपक्खंमि ।
अप्पाणं इयरो पुण गिहत्थधम्माओ चुक्कोत्ति ॥

- [३३] जइ वि न सक्कं काठं सम्मं जिनभासियं अनुट्ठाणं ।
तो सम्मं भासिज्जा जह भणियं खीणरागेहिं ॥
- [३४] ओसन्नोऽवि विहारे कम्मं सोहेइ सुलभबोही य ।
चरण-करणं विसुद्धं उववूहितो परुवितो ॥
- [३५] सम्मग्ग-मग्ग-संपट्ठियाण साहूण कुणइ वच्छल्लं ।
ओसह-भेसज्जेहि य सयमन्नेणं तु कारेइ ॥
- [३६] भूए अत्थि भविस्संति केई तेलुक्क नमिय-कमजुयला ।
जेसिं परहिय-करणेक्क-बद्धलक्खाण वोलिहिइ कालो ॥
- [३७] तीयाणागयकाले केई होहिंति गोयमा ! सूरी ।
जेसिं नामग्गहणे वि हुज्ज नियमेण पच्छित्तं ॥
- [३८] जओ-सयरीभवन्ति अणवेक्खयाइ जह भिच्च-वाहणा लोए ।
पडिपुच्छाहिं चोयण तम्हा उ गुरु सया भयइ ॥
- [३९] जो उ प्पमायदोसेणं, आलस्सेणं तहेव य ।
सीसवग्गं न चोएइ, तेण आणा विराहिया ॥
- [४०] संखेवेण मए सोम्म !, वण्णियं गुरुलक्खणं ।
गच्छस्स लक्खणं धीर !, संखेवेणं निसामय ॥
- [४१] गीयत्थे जे सुसंविग्गे, अनालस्सी दढव्वए ।
अक्खलिय-चरित्ते सययं, राग-द्वोसविवज्जए ॥
- [४२] निट्ठविय अट्ठमयट्ठाणे, सोसिय कसाए जिइंदिए ।
विहरिज्जा तेण सद्धिं तु, छउमत्थेण वि केवली ॥
- [४३] जे अणहिय-परमत्था, गोयमा ! संजया भवे ।
तम्हा ते उ विवज्जिज्जा, दोग्गई पंथदायगे ॥
- [४४] गीयत्थस्स उ वयणेणं, विसं हालाहलं पिबे ।
निच्चिकप्पो य भक्खिज्जा, तक्खणं जं समुद्वे ॥
- [४५] परमत्थओ विसं नो तं, अमयरसाणं खु तं ।
निच्चिग्घं जं न तं मारे, मओ वि अमयस्समो ॥
- [४६] अगीयत्थस्स वयणेणं, अमयंपि न घुंटे ।
जेण नो तं भवे अमयं, जं अगीयत्थ-देसियं ॥
- [४७] परमत्थओ न तं अमयं विसं हालाहलं खु तं ।
न तेण अजरामरो हुज्जा, तक्खणा निहणं वए ॥
- [४८] अगीयत्थ-कुसीलेहिं, संगं तिविहेण वोसिरे ।
मुखमग्गस्सिमे विग्घं, पहंमी तेणगे जहा ॥
- [४९] पज्जलियं हुयवहं दट्ठुं, निस्संको तत्थ पवेसिं ।
अत्ताणं निद्वहिज्जाहि, नो कुसीलस्स अल्लिए ॥

- [५०] पजलंति जत्थ धगधगस्स गुरुणावि चोइए सीसा ।
राग-द्वोसेण वि अनुसएणं तं गोयम ! न गच्छं ॥
- [५१] गच्छो महानुभावो तत्थ वसंताण निज्जरा विठला ।
सारण-वारण-चोयणमाईहिं न दोसपडिवती ॥
- [५२] गुरुणो छंदणुवित्ती सुविनीए जियपरीसहे धीरे ।
नवि थद्धे नवि लुद्धे नवि गारविए न विगहसीले ॥
- [५३] खंते दंते गुत्ते मुत्ते वेरग्ग-मग्ग-मल्लीणे ।
दसविह-सामायारी - आवस्सग संजमुज्जुत्ते ॥
- [५४] खर-फरुस-कक्कसाएऽनिट्ठदुट्ठाए निट्ठुरगिराए ।
निब्भच्छण निद्धाडणमाईहिं न जे पउस्संति ॥
- [५५] जे य न अकित्तिजणए नाजसजणए नऽकज्जकारी य ।
न पवयण-उड्डाहकरे कंठग्गय-पाणसेसेऽवि ॥
- [५६] गुरुणा कज्जमकज्जे खर-कक्कस-दुट्ठ-निट्ठुरगिराए ।
भणिए तहत्ति सीसा भणंति तं गोयमा ! गच्छं ॥
- [५७] दूरुज्झिय पत्ताइसु ममतए निप्पिहे सरीरेऽवि ।
जायम-जायाहारे बायालीसेसणा-कुसले ॥
- [५८] तंपि न रूव-रसत्थं न य वण्णत्थं न चेव दप्पत्थं ।
संजमभर-वहणत्थं अक्खोवंगं व वहणत्थं ॥
- [५९] वेयण वेयावच्चे ईरियट्ठाए य संजमट्ठाए ।
तह पाणवत्तियाए छट्ठं पुण धम्मचिंताए ॥
- [६०] जत्थ य जेट्ठ-कनिट्ठो जाणिज्जइ जेट्ठवयण-बहुमानो ।
दिवसेण वि जो जेट्ठो न हीलिज्जइ स गोयमा ! गच्छो ॥
- [६१] जत्थ य अज्जाकप्पं पाणच्चाए वि रोरदुब्भिक्खे ।
न य परिभुंजइ सहसा गोयम ! गच्छं तयं भणियं ॥
- [६२] जत्थ य अज्जाहिं समं थेरा वि न उल्लविंति गयदसणा ।
न य झायंती थीणं, अंगोवंगाइं तं गच्छं ॥
- [६३] वज्जेह अप्पमत्ता अज्जासंसग्गि अग्गि-विससरिसं ।
अज्जानुचरो साहू लहइ अकित्तिं खु अचिरेण ॥
- [६४] थेरस्स तवस्सियस्स व बहुस्सुयस्स व पमाणभूयस्स ।
अज्जा-संसग्गीए जन-जंपणयं हविज्जा हि ॥
- [६५] किं पुन तरूणो अबहुस्सुओ य न य वि हु विगिट्ठतवचरणो ।
अज्जा-संसग्गीए जन-जंपणयं न पाविज्जा ? ॥
- [६६] जइ वि सयं थिरचित्तो तहा वि संसग्गिलद्धपसराए ।
अग्गिसमीवे व घयं विलिज्ज चित्तं खु अज्जाए ॥

- [६७] सव्वत्थ इत्थिवग्गंमि अप्पमतो सया अवीसत्थो ।
नित्थरइ बंभचेरं तव्विवरीओ न नित्थरइ ॥
- [६८] सव्वत्थेसु विमुत्तो साहू सव्वत्थ होइ अप्पवसो ।
सो होइ अणपव्वसो अज्जाणं अनुचरंतो उ ॥
- [६९] खेलपडियमप्पाणं न तरइ जह मच्छिआ विमोएउं ।
अज्जानुचरो साहू न तरइ अप्पं विमोएउं ॥
- [७०] साहुस्स नत्थि लोए अज्जासरिसी हु बंधणो उवमा ।
धम्मणेण सह ठवेतो न य सरिसो जाण असिलेसो ॥
- [७१] वायामित्तेण वि जत्थ भट्ठचरित्तस्स निग्गहं विहिणा ।
बहुलद्धिजुयस्सा वि कीरइ गुरुणा तयं गच्छं ॥
- [७२] जत्थ य सन्निहि-उक्खड-आहडमाईण नामगहणेऽवि ।
पूर्इकम्मा भीया आउत्ता कप्प-तिप्पेसु ॥
- [७३] मउए निहुयसहावे हास -द्वविवज्जिए विगहमुक्के ।
असमंजसमकरिंते गोअरभूमट्ठ विहरंति ॥
- [७४] मुणिणो नानाभिग्गह दुक्कर-पच्छित्त-मनुचरंताणं ।
जायइ चित्तचमक्कं देविंदाणं पि तं गच्छं ॥
- [७५] पुढवि-दग-अगनि-मारुय वणप्फइ-तसाण-विविहजीवाणं ।
मरणंते वि न पीडा कीरइ मनसा तयं गच्छं ॥
- [७६] खज्जूरिपत्तमुंजेण, जो पमज्जे उवस्सयं ।
नो दया तस्स जीवेसु, सम्मं जाणाहि गोयमा ! ॥
- [७७] जत्थ य बाहिरपाणिस्स बिंदुमित्तं पि गिम्हमाईसु ।
तण्हा-सोसिय-पाणा मरणेऽवि मुनी न गिण्हंति ॥
- [७८] इच्छिज्जइ जत्थ सया बीयपण्णा वि फासुयं उदयं ।
आगमविहिणा निउणं गोयम ! गच्छं तयं भणियं ॥
- [७९] जत्थ य सूलि विसूइय अन्नयरे वा विचित्तमायंके ।
उप्पन्ने जलणुज्जालणाइ न करेइ तं गच्छं ॥
- [८०] बीयपण्णं सारुविगाइ-सइढाइमाइएहिं च ।
कारिंतो जयणाए गोयम ! गच्छं तयं भणियं ॥
- [८१] पुप्फाणं बीयाणं तयमाईणं च विविह दव्वाणं ।
संघट्टण परियावण जत्थ न कुज्जा तयं गच्छं ॥
- [८२] हासं खेइडा कंदप्प नाहियवायं न कीरणे जत्थ ।
धावण-डेवण-लंघण ममकाराऽवण्ण-उच्चरणं ॥
- [८३] जत्थित्थीकरफरिसं अंतरियं कारणेऽवि उप्पन्ने ।
दिट्ठीविस दित्तग्गी विसं व वज्जिज्जए गच्छे ॥

- [८४] बालाए वुड्ढाए नत्तुय दुहियाए अहव भइणीए ।
न य कीरइ तनुफरिसं गोयम ! गच्छं तयं भणियं ॥
- [८५] जत्थित्थीकरफरिसं लिंगी अरिहा वि सयम वि करिज्जा ।
तं निच्छयओ गोयम ! जाणिज्जा मूलगुण-भट्ठं ॥
- [८६] कीरइ बीयपणं सुत्तमभणियं न जत्थविहिणा उ ।
उप्पन्ने पुण कज्जे दिक्खा-आयंकमाईए ॥
- [८७] मूलगुणेहिं विमुक्कं बहुगुणकलियं पि लद्धिसंपन्नं ।
उत्तमकुलेऽवि जायं निद्धाडिज्जइ तयं गच्छं ॥
- [८८] जत्थ हिरण्ण-सुवण्णे धन-धन्ने कंस-तंब-फलिहाणं ।
सयणाण आसणाण य झुसिराणं चेव परिभोगो ॥
- [८९] जत्थ य वारडियाणं तत्तडियाणं च तह य परिभोगो ।
मोत्तुं सुक्किल-वत्थं का मेरा तत्थ गच्छम्मि ? ॥
- [९०] जत्थ हिरण्ण-सुवण्णं हत्थेण पराणगं पि नो छिप्पे ।
कारणसमप्पियं-पि हु निमिस-खणद्धं पि तं गच्छं ॥
- [९१] जत्थ य अज्जालद्धं पडिगहमाई वि विविहमुवगरणं ।
परिभुंजइ साहूहिं तं गोयम ! केरिसं गच्छं ? ॥
- [९२] अइदुल्लह-भेसज्जं बल-बुद्धिविवड्ढणं पि पुट्ठिकरं ।
अज्जालद्धं भुंजइ का मेरा तत्थ गच्छंमि ? ॥
- [९३] एगो एगित्थिए सद्धिं, जत्थ चिट्ठिज्ज गोयमा ! ।
संजईए विसेसेणं, निम्मेरं तं तु भासिमो ॥
- [९४] दढचारित्तं मोत्तुं आइज्जं मयहरं च गुणरासिं ।
एक्को अज्झावेई तमनायारं न तं गच्छं ॥
- [९५] घनगज्जिय-हयकुहियं विज्जू - दुग्गिज्ज-गूढहिययाओ ।
अज्जा अवारियाओ इत्थीरज्जं न तं गच्छं ॥
- [९६] जत्थ समुद्देसकाले साहूणं मंडलीए अज्जाओ ।
गोयम ! ठवंति पाए इत्थीरज्जं न तं गच्छं ॥
- [९७] जत्थ मुणीण कसाए जगडिज्जंता वि परकसाएहिं ।
निच्छंति समुट्ठेऽं सुनिविट्ठो पंगुलो चेव ॥
- [९८] धम्मंतरायभीए भीए संसार-गबभवसहीणं ।
न उईरंति कसाए मुनी मुणीणं तयं गच्छं ॥
- [९९] कारणमकारणेणं अह कह वि मुणीण उट्ठिहिं कसाए ।
उदिए वि जत्थ रूभेहिं खामिज्जइ जत्थ तं गच्छं ॥
- [१००] सील-तव-दान-भावना चउविह-धम्मंतराय-भयभीए ।
जत्थ बहू गीयत्थे गोयम ! गच्छं तयं भणियं ॥

- [१०१] जत्थ य गोयम ! पंचण्ह कह वि सूणाण इक्कमवि हुज्जा ।
तं गच्छं तिविहेणं वोसिरिय वएज्ज अन्नत्थ ॥
- [१०२] सूणारंभपवत्तं गच्छं वेसुज्जलं न सेविज्जा ।
जं चारित्तगुणेहिं तु उज्जलं तं तु सेविज्जा ॥
- [१०३] जत्थ य मुणिणो कयविककयाइं कुव्वंति संजमुब्भट्ठा ।
तं गच्छं गुणसायर ! विसं व दूरं परिहरिज्जा ॥
- [१०४] आरंभेसु पसता सिद्धंतपरम्महा विसयगिद्धा ।
मोत्तुं मुणिणो गोयम ! वसिज्ज मज्झे सुविहियाणं ॥
- [१०५] तम्हा सम्मं निहालेउं, गच्छं सम्मग्गपट्ठियं ।
वसिज्जा पक्ख मासं वा, जावज्जीवं तु गोयम ! ॥
- [१०६] खुड्ढो वुड्ढो तहा सेहो, जत्थ रक्खे उवस्सयं ।
तरूणो वा जत्थ एगागी, का मेरा तत्थ भासिमो ? ॥
- [१०७] जत्थ य एगा खुड्डी एगा तरूणी उ रक्खए वसहिं ।
गोयम ! तत्थ विहारे का सुद्धी बंभचेरस्स ? ॥
- [१०८] जत्थ य उवस्सयाओ बाहिं गच्छे मुहुत्तमित्तंपि ।
एगा रत्तिं समणी का मेरा तत्थ गच्छस्स ?, ॥
- [१०९] जत्थ य एगा समणी एगो समणो य जंपए सोम्म ! ।
नियबंधुणा वि सद्धिं तं गच्छं गच्छगुणहीनं ॥
- [११०] जत्थ जयारमयारं समणी जंपइ गिहत्थपच्चक्खं ।
पच्चक्खं संसारे अज्जा परिक्खिवइ अप्पाणं ॥
- [१११] जत्थ य गिहत्थभासाहिं भासए अज्जिया सुरुट्ठावि ।
तं गच्छं गुणसायर ! समण-गुण-विवज्जियं जाण ॥
- [११२] गणि गोयम ! जा उचियं, सेयं वत्थं विवज्जिउं ।
सेवए चित्तरूवाणि, न सा अज्जा वियाहिया ॥
- [११३] सीवणं तुन्नणं भरणं, गिहत्थाणं तु जा करे ।
तिल्लउव्वट्ठणं वा वि, अप्पणो य परस्स य ॥
- [११४] गच्छइ सविलासगई सयनीयं तूलियं सबिब्बोयं ।
उव्वट्ठेइ सरीरं सिणाणमाईणि जा कुणइ ॥
- [११५] गेहेसु गिहत्थाणं गंतूण कहा कहेइ काहीआ ।
तरूणाइ अहिवडंते अनुजाणे सा उ पडिनीया ॥
- [११६] वुड्ढाणं तरूणाणं रत्तिं अज्जा कहेइ जा धम्मं ।
सा गणिणी गुणसायर ! पडिनीया होइ गच्छस्स ॥
- [११७] जत्थ य समणीणमसंखडाइं गच्छंमि नेव जायंति ।
तं गच्छं गच्छवरं गिहत्थभासाओ नो जत्थ ॥

- [११८] जो जतो वा जाओ नाऽऽलोअइ दिवसपक्खिअं वा वि ।
सच्छंदा समणीओ मयहरियाए न ठायंति ॥
- [११९] विट्ठिआणि पउंजंति गिलाण सेहीण नेव तिप्पंति ।
अनगाढे आगाढं करेति आगाढि अनगाढं ॥
- [१२०] अजयणाए पकुव्वंति, पाहुणगाण अवच्छलं ।
चित्तल्लयाणि अ सेवंति, चित्ता रयहरणा तहा ॥
- [१२१] गइ-विब्भमाइएहिं आगारविगार तह पगासिंति ।
जह वुड्ढाण वि मोहो समुईरइ किं तु तरुणाणं ? ॥
- [१२२] बहुसो उच्छोलिंती मुह-नयणे हत्थ-पाय-कक्खाओ ।
गिण्हेइ रागमंडल सोइंदिय तह य कब्बट्ठे ॥
- [१२३] जत्थ य थेरी तरुणी य थेरी तरुणी य अंतरे सुयइ ।
गोयम ! तं गच्छवरं वर-नाण-चरित्त-आहारं ॥
- [१२४] धोइंति कंठियाओ पोइंति तह य दिंति पोत्ताणि ।
गिहकज्जचित्तगीओ न हु अज्जा गोयमा ! ताओ ॥
- [१२५] खर-घोडाइट्ठाणे वयंति ते वा वि तत्थ वच्चंति ।
वेसत्थी संसग्गी उवस्सयाओ समीवंमि ॥
- [१२६] छक्कायमुक्कजोगा धम्मकहा विगह पेसण गिहीणं ।
गिहिनिस्सजं वाहिंति संथवं तह करंतीओ ॥
- [१२७] समा सीस पडिच्छीणं, चोयणासु अनालसा ।
गणिणी गुणसंप्पन्ना, पसत्थ पुरिसानुगा ॥
- [१२८] संविग्गा भीयपरिसा य, उग्गदंडा य कारणे ।
सज्झाय-ज्झाणजुता य, संगहे अ विसारया ॥
- [१२९] जत्थुत्तर-पडिउत्तर-वडिआ अज्जा उ साहुणा सद्धिं ।
पलवंति सुरूट्ठा वी गोयम ! किं तेन गच्छेण ? ॥
- [१३०] जत्थ य गच्छे गोयम ! उप्पन्ने कारणंमि अज्जाओ ।
गणिणी पिट्ठिठियाओ भासंती मउय सद्धेणं ॥
- [१३१] माऊए दुहियाए सुण्हाए अहव भइणिमाईणं ।
जत्थ न अज्जा अक्खइ गुत्ति विभेयं तयं गच्छं ॥
- [१३२] दंसणइयारं कुणई चरित्तनासं जणेइ मिच्छतं ।
दोण्ह वि वग्गेणऽज्जा विहारभेअं करेमाणी ॥
- [१३३] तं मूलं संसारं जणेइ अज्जा वि गोयमा ! नूनं ।
तम्हा धम्मवएसं मोत्तुं अन्नं न भासिज्जा ॥
- [१३४] मासे मास उ जा अज्जा, एगसित्थेण पारए ।
कलहे गिहत्थ-भासाहिं, सव्वं तीए निरत्थयं ॥

- [१३५] महानिसीह-कप्पाओ, ववहाराओ तहेव य ।
साहु-साहुणि अट्ठाए, गच्छायारं समुद्धियं ॥
- [१३६] पढंतु साहुणो एयं, असज्झायं विवज्जिउं ।
उत्तमं सुयनिस्संदं, गच्छायारं सुउत्तमं ॥
- [१३७] गच्छायारं सुणित्ताणं, पढित्ता भिक्खु भिक्खुणी ।
कुणंतु जं जहा भणियं, इच्छंता हियमप्पणो ॥

मुनि दीपरत्तसागरेण संशोधितः सम्पादितश्च “गच्छाचारो पइण्णयं सम्मत्तं”

३०/१

गच्छायारो – सत्तमं पइण्णयं सम्मत्तं